।श्री।।

श्रीमान् शांतारामबापू, दिग्दर्शक प्रभात फिल्म कंपनी, पु०,
सेवा में सादर प्रणाम.

पत्र इसीलिए लिख रही हूं कि हमारे संकट के दिनों में आपने हमारे पूरे परिवार को जो समय-समय पर सहायता पहुंचाई है, उसके लिए अपने बालबच्चों की ओर से आपको बहु 'न्यवाद दूं. आपने जो उपकार किया है उसकी पूर्ति कर पा (है. परमात्मा के चरणों में मेरी यही प्रार्थना है कि वह आप .यु दे और हमेशा संपूर्ण सुख में रखे.

आपने थैली-निधि की कल्पना चला कर हमारे लिए जो पांच हजार रुपए इकट्ठा कर भेजे, उसके कारण हम एक बहुत बड़े संकट से मुक्त हो गए. इस उपकार को मैं और मेरे बच्चे हमेशा याद करेंगे. हमारे घरवालों का स्वभाव कुछ क्रोधी और कुछ अजीब-सा है. फलस्वरूप आप जैसे भले लोगों को भी कभी-कभी कष्ट पहुंचता है, मैं भलीभांति जानती हूं. आपको स्वयं इस तरह कोई कष्ट पहुंचा हो, तो मेरे बाल बच्चों की ओर देख कर कृपया उसे भुला दें और हम पर इसी तरह की कृपादृष्टि बनाए रखें.

दि. २७ मई १९३९. सौ. सरस्वतीबाई फालके.